NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

आधुनिक पद्धिति से स्ट्राबेरी की खेती

राधा* *एवं* डॉ. अतुल यादव**

परिचय:

स्ट्राबेरी जिसका *वैज्ञानिक* नाम ***फ्रैगरिया अनानासा*** है स्ट्राबेरी **रोजेसी** कुल का पौधा है जिसकी उत्पति उत्तरी अमेरिका में हुई थी। यहाँ से यह यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस व अन्य देशों के पर्वतीय अंचलों एवं शीतोषण प्रदेशों में फैला है। भारत में इसका उत्पादन पर्वतीय भागों में नैनीताल, देहरादून, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, नीलगिरी, दार्जलिंग आदि की पहाड़ियों में व्यावसायिक तौर पर किया जा रहा है। इसकी खेती अब मैदानी भागों, दिल्ली, बंगलौर, जालंधर, मेरठ, पंजाब, हरियाणा आदि क्षेत्रों में भी की जा रही है। सोलन हल्दवानी, देहरादून, नासिक, गुड़गाँव एवं अबोहर स्ट्राबेरी के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

झारखंड की मिट्टी तथा जलवायु स्ट्रोबेरी की खेती के लिए उपयुक्त है। अत: यहाँ पर इसकी व्यवसायिक खेती की जा सकती है। इसके लाल, गुलाबी, सुगंधित व पौष्टिक फलों की आजकल बहुत मांग है। इससे जैम व जैली आदि भी बनाया जाता है। इसके 100 ग्राम फल में 87.7% पानी, 0.7% प्रोटीन, 0.2% वसा, 0.4% खनिज लवण, 1.1% रेशा, 9.8% कार्बोहाइड्रेट, 0.03% कल्शियम, 0.03% फास्फोरस व 1.8% लौह तत्व पाया जाता है। इसके अलावा इसमें 30 मि.ग्रा. निकोटिनिक एसिड, 52 मि.ग्रा. विटामिन सी व 0.2 मि.ग्रा. राइवोफ्लेविन भी होता है। विटामिन सी, लौह व खनिज तत्व की प्रचुर मात्रा होने के कारण इस फल का सेवन रक्त अल्पता से ग्रसित रोगियों के लिए बहुत ही लाभप्रद पाया गया है।

किस्में

भारत वर्ष में उगाई जाने वाली स्ट्राबेरी की अधिकांश किस्में है व कुछ किस्में संकर विधि से यहाँ की जलवायु के अनुसार विकसित की गई है।

- ❖ अगेती - डगलस, गोरिल्ला, फर्न, अर्लिग्लो एवं तिओगा।
- ❖ पिछेती - चांडलर, डाना, सेल्भा एवं स्वीट चार्ली।

प्रवर्धन

स्ट्राबेरी का व्यावसायिक तौर पर

राधा* *एवं* डॉ. अतुल यादव**
शोध *छात्रा एवं* सहायक प्राध्यापक
फल विज्ञान, विभाग
आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, **224 229** (यूपी)

प्रसारण के लिए फलन के बाद जून-जुलाई में जब स्ट्राबेरी में रनर निकलने लगे तो पौधों पर 15 दिन के अंतर पर (50 पी.पी.एम.) जिब्रेलिक एसिड के घोल का छिड़काव करते हैं। इसके प्रति रनर से 15 से 20 पौधे बन जाते है। शुरू के 3-4 पौधे ही उत्पादक होते है। अत: इन्हीं पौधों को मुख्य खेत में लगाते है। उत्पादक खेत में निकलने वाले रनर्स को तोड़ देने से उपज अच्छी मिलती है। टिशु कल्चर के द्वारा भी रनर का उत्पादन सफलतापूर्वक किया जा सकता है। एक पौधे से दूसरे मौसम में 5-10 तक नये पौधे (रनर) तैयार हो जाते है।

ज्यादातर स्ट्रॉबेरी की फसल खुले मैदान में उगाई जाती है; आजकल स्ट्रॉबेरी की खेती ग्रीनहाउस में की जाने लगी है क्योंकि ऑफ सीजन में स्ट्रॉबेरी की कीमत ज्यादा होती है। ग्रीनहाउस में , स्ट्रॉबेरी के पौधे पूरे साल बढ़ते हैं।

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए मिट्टी की आवश्यकता

स्ट्राबेरी का पौधा अच्छी जल निकासीवाली रेतीली मिट्टी पर सबसे अच्छा प्रदर्शन करता है। भारी जलभराव वाली मिट्टी स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती है। 5.5 - 7 के बीच पीएच और 0.7mS/cm से नीचे EC वाली मिट्टी स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए आदर्श है।

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिये क्यारी की तैयारी

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए एक उठी हुई क्यारी पर दो-पंक्ति प्रणाली उपयोगी है।

- क्यारी की चौड़ाई: 60 सेमी
- मार्ग: 50 सेमी

उर्वरक

क्यारीया तैयार करते समय बेसल खुराक और एफवाईएम डालें। यह बेसल खुराक और एफवाईएम मिट्टी की संरचना में सुधार करता है और धीरे-धीरे पोषक तत्व प्रदान करता है।

- FYM - दस टन / एकड़
- 18:46:00 (डी-अमोनियम फॉस्फेट - डीएपी) 50 किग्रा/एकड़

मल्चिंग

स्ट्रॉबेरी की खेती में ज्यादातर मल्चिंग का उपयोग किया जाता है, और रोपण से पहले, ज्यादातर काले और चांदी के रंग का मल्चिंग पेपर का चयन किया जाता है।

प्लास्टिक मल्चिंग का मुख्य उपयोग मिट्टी के तापमान को बनाए रखना और जड़ों को ठंड से बचाने के लिए है। मल्चिंग के अन्य लाभ यह है कि यह फलों की सड़न को कम करने में मदद करता है, फलों को साफ करता है, मिट्टी की नमी का संरक्षण करता है, सिंचाई के पानी की बचत करता है, खरपतवार की वृद्धि को रोकता है और गर्म मौसम में मिट्टी के तापमान को कम करता है और फूलों को ठंढ से बचाता है।

सिंचाई

स्ट्रॉबेरी की खेती में **ड्रिप सिंचाई का उपयोग किया जाता है।** ड्रिप सिस्टम में, 1-2 लेटरल लाइन 16 मिमी, ड्रिपर के साथ हर 30 सेंटीमीटर और डिस्चार्ज 2 या 4 लीटर/घंटा। मिट्टी की नमी के स्तर को बनाए रखना आवश्यक है क्योंकि स्ट्रॉबेरी अपेक्षाकृत उथली जड़ वाला पौधा है और सूखे के लिए अतिसंवेदनशील है।

रोपण का समय

भारत में स्ट्रॉबेरी की खेती का मौसम

महाराष्ट्र	अगस्त से नवंबर
ईशान कोण	नवंबर से जनवरी
उत्तर भारत	सितंबर से जनवरी
दक्षिण भारत	जनवरी और जुलाई

प्लांट स्पेसिंग

- दो पंक्तियों को एक बिस्तर पर 30 सेमी x 30 सेमी के बीच की दूरी पर लगाया जाता है।
- प्रति एकड़ कुल पौधों की आबादी 24,000 पौधे हैं।

रोपण

पौधे को रोपते समय और पौधे के क्राउन वाले भाग की देखभाल करते समय क्यारी पर लगाया जाएगा। यह मुकुट भाग पौधों के 1/3 भाग से मिट्टी के संपर्क में नहीं आना चाहिए। उसके बाद स्प्रिंकलर से क्यारी की सिंचाई करें और क्यारी पर नमी बनाए रखें।

फसल जीवनचक्र

स्ट्रॉबेरी का पौधा कुल जीवन 8-9 महीने। रोपण के बाद, यदि पौधे की वांछित वृद्धि के लिए परिस्थितियाँ उपयुक्त हैं, तो पौधा रोपण के लगभग 35-40 के बाद फूलना शुरू कर देगा।

स्ट्राबेरी की कटाई

जब स्ट्राबेरी फल को 50% -75% लाल रंग आना शुरू होता है तो स्टोबेरी की कटाई शुरू हो जाती है। स्ट्रॉबेरी की कटाई का सबसे अच्छा समय सुबह का होता है। स्ट्रॉबेरी

की कटाई सप्ताह में 3-4 बार की जाती है। स्ट्रॉबेरी के फलों को छोटी ट्रे या टोकरियों में काटा जाता है। यदि सही रख रखाव और जलवायु परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो प्राप्त औसत उपज लगभग 500-600 ग्राम/पौधे/मौसम है।

कीट तथा रोग से बचायें

रेड-कोर: यह फफूंदी जनित बीमारी है। प्रभावित पौधे छोटे आकार के रहते है तथा पत्तियाँ नील-हरित शैवाल के रंग की प्रतीत होती है। प्रभावित पौधे की जड़ों को तोड़कर देखने से उनका मध्य भाग लाल रंग का दिखाई पड़ता है। नियंत्रण के लिए 4 ग्राम रिडोमिल नामक दवा को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

एन्थ्रेकनोज: इस रोग से प्रभावित पौधे की पत्तियों, तनों वं फल पर काले रंग के छोटे-छोटे धब्बे बनते हैं। मैंकोजेब प्रतिशत घोल के प्रयोग से इस पर काबू पाया जा सकता है।

झुलसा: पौधे की पत्तियों पर अनियमित आकार के लाल व बैगनी रंग के धब्बे दिखाई पड़ते हैं। फफूंदी का उग्र प्रकोप होने पर पौधे के सभी भाग झुलस से जाते हैं।

इसके अतिरिक्त एफिड, लाल मकड़ी, थ्रिप्स, सफेद मक्खी आदि कीड़े पत्तियों से रस चूसकर फसल को हानि पहुँचाते हैं। सैप विटिल नामक कीड़ा पके हुए फलों में छेद करके रस चूसता है। इसे नियंत्रण के लिए इंडोसल्फान 0.5 प्रतिशत का प्रयोग करते हैं।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE